ભારતીય નાટ્ય સાહિત્ય

સંપાદક

પ્રિ.ડો. કે.એલ. પટેલ

પ્રો. ડો. એ.એસ.પટેલ
પ્રો. ડો. ડી.કે.ભોયા

પ્રો. વી.જી.પટેલ
પ્રો.ડો. કે.વી. ગાંધિત

Scanned by CamScanner

ભારતીય નાટ્ય સાહિત્ય

નાટ્ય વિષયક લેખોનો સંગ્રહ

સંપાદક

પ્રિ.ડો. કે.એલ. પટેલ
પ્રો. ડો. એ.એસ.પટેલ
પ્રો. ડો. ડી.કે.ભોયા
પ્રો. વી.જી.પટેલ
પ્રો.ડો. કે.વી. ગાંધિત

પ્રકાશન

ગ્રીન ફ્લેગ ફાઉન્ડેશન,
સોનાસણ ગુજરાત- ૩૮૩૨૧૦
www.eternityzxy.com

ISBN 978-93-87988-46-0

Scanned by CamScanner

Copyright: Author

All rights reserved. Any person who does any unauthorized act in relation to this publicatio may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

© Dr. K.L.Patel, Dr.A.S.Patel, Dr.D.K.Bhoya, Pro. V.G.Patel, Dr. K.V.Gavit

First Publication: May - 2019

ISBN 978-93-87988-46-0

પ્રથમ આવૃતિ
૨૦૧૯ – મે

ટાઈપ એન્ડ સેટીંગ
શિલ્પા આર. પટેલ

પ્રિન્ટીંગ એન્ડ બાઈંડીંગ
ભગવતી પ્રિન્ટીંગ પ્રેસ, હિંમતનગર

પ્રકાશન

ગ્રીન ફ્લેગ ફાઉન્ડેશન,
સોનાસણ ગુજરાત- ૩૮૩૨૧૦
www.eternityzxy.com

એક પ્રતની કિમત : Rs.350/-

Scanned by CamScanner

:: અનુક્રમણિકા ::

ક્રમ	વિષય	પાનાં.નં.
1	'आधे-अधूरे नाटक में व्यक्त मध्यवर्गीय विसंगति' प्रा. डॉ. भावना एन. सावलिया	01
2	કનૈયાલાલ મુનશીના નાટકોમાંથી મળતી ઐતિહાસિકતા ડૉ. સંગીતા એન. બકોત્રા	07
3	ભારતીય નાટ્ય સાહિત્ય સંદર્ભે ચં.ચી. મહેતાકૃત 'આગગાડી'નું મૂલ્યાંકન પ્રા. ડૉ. જિતેન્દ્ર ખરાડી	10
4	Kalidasa's conception of love in light of *Malavikagnimitr* and *Sakuntala* Mrs. Foram Patel	13
5	ક.મા.મુનશીના સામાજિક નાટકોમાં સમાજ નિરૂપણ પ્રિ.ડૉ.કે.એલ.પટેલ	19
6	સંસ્કૃત નાટ્યઅંશોમાં પ્રયુક્ત વક્રોક્તિ (विक्रमोर्वशीयम् मुद्राराक्षस-નાટ્યઅંશોમાં પ્રકરણવક્રતા) ડૉ.દીક્ષા એચ. સાવલા	21
7	'સ્વપ્નાક્ષરી' - લયાત્મક એકાંકી સંગ્રહ ડૉ. નિયતિ અંતાણી	27
8	ક.મા. મુનશીના નાટકોમાં સ્ત્રીપાત્રો પ્રા.ડૉ.અરવિંદભાઈ એસ.પટેલ	31
9	આધુનિક અને અનુઆધુનિક યુગનું નાટ્ય સાહિત્ય મકશીભાઇ રબારી	33
10	મિથ્યાભિમાનની સમીક્ષા ડાભી સાદીક ગુલશનભાઈ	36

Scanned by CamScanner

'आधे-अधूरे नाटक में व्यक्त मध्यवर्गीय विसंगति'

प्रा. डॉ. भावना एन. सावलिया

साहित्य व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व के विविध आयामों की खुली किताब है। जिसमें मनुष्य को सुख-दुःख, आशा-निराशा, विभिन्न ऐषणाएँ एवं विभिन्न अनुभूतियों के साथ उसके आसपास के परिवेश की चित्रण भी होता है। साहित्य का मूल उद्देश्य ही यही होता है कि युगीन परिस्थितियों का परिचय करवाना और मूल समस्याओं का निदन करके उसे दूर करना।

शाश्वंत अविच्छिन्न तथा अबोध गति से प्रभावित होनेवाला काल जब विशिष्ट सीमा से अवरुध्ध हो जाता है तो उसे युग कहा जाता है। काल को समयरुपी वृत्ति की परिधि कहा जा सकता है और युग को उसका एक चाप। किसी भी युग के निर्धारण में जीवन, इतिहास और कला-परिचायक तत्व होते हैं। युग की अपनी साधन संम्पन्नता और कला सम्बन्धी रुची होती है। युग परिवर्तन में काल सापेक्ष जीवन-मूल्यों अपनी महत्ता खो बैठते हैं और काल निरपेक्ष जीवन मूल्य आगत नए जीवन मूल्यों की विरासत बनते हैं। प्रत्येक युग दूसरे युग को विचारों एवं संस्कारों की पूंजीभूत राशि देकर जाता है, अन्यथा यह सृष्टि अस्तित्वहीन होकर कभी की शून्य में विल्लीन हो जाती।

आधुनिक नाट्य साहित्य को नयी दिशा की ओर ले जानेवाले मोहन राकेश का जन्म ८ जनवरी १९२५ ई. को पंजाब के अमृतसर शहर में हुआ था। इनके पिताश्री करमचन्द गुगलानी अधिवक्ता होते हुए भी साहित्य और संगीत के प्रेमी थे, जिनका प्रभाव मोहन राकेश के जीवन पर पडा। वे सन् १९६३ से १९७२ ई. तक निरंतर स्वतंत्र लेखन करते रहे जो उनकी आजीविका का आधार भी रहे।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक की नयी दिशा को प्राण देनेवाले प्रतिभा सम्पन्न नाटककार मोहन राकेश ने सिर्फ नाटक ही नहीं लिखे। उन्होंने निबन्ध, एकांकी, उपन्यास, कहानी, यात्रावृत्त, डायरी, जीवनी संकलन आदि विधा में अपनी कलम चलायी है और हिन्दी साहित्य जगत को समृद्ध किया है। ३ जनवरी १९७२ में नयी दिल्ली में इस हिन्दी के नक्षत्र का निधन हुआ।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी के समकालीन नाटकों में मोहन राकेश का नाटक 'आधे-अधूरे' सातवे दशक का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नाटक रहा है। 'आधे अधूरे' नाटक का प्रकाशन १९६९ में हुआ था। इसमें मोहन राकेश ने समकालीन जीवन की यथार्थ संवेदनाओं को सूक्ष्मताओं के साथे प्रस्तुत किया है। कथानक, संवाद और चरित्र - सब में अधूरापन लेकर चलनेवाला यह नाटक राकेश के पूर्ववर्ती दोनों नाटकों से बिलकुल भिन्न है। वर्तमान को अतीत के माध्यम से मुखरित करने का मोह छोडकर नाटककार ने वर्तमान से सीधा साक्षात्कार किया है। स्वतंत्रता के पश्चात मध्यवर्ग में आर्थिक विषमताओं ने क्रमशः पारिवारिक बिखराव, मानसिक तनाव और नैतिक पतन को बढावा दिया है। नाटककार राकेश ने इस नाटक में आज की संत्रासपूर्ण परिस्थितियों की कटू

Scanned by CamScanner

सम्भावनाओं का संकेत किया है। मध्यवर्गीय जीवन में आनेवाली शुष्क और विनाशकारी रिक्तता को व्यक्त करनेवाला यह नाटक मनुष्य के खोखलेपन, सम्बन्धों के सतहीपन तथा जीवन-आदर्शों के लड़खड़ाते मानदण्डों को सजीव रूप से प्रस्तुत करता है। आर्थिक विषमताने किस प्रकार आज के दाम्पत्य जीवन और पारिवारिक परिवेश में विषैला वातावरण बना दिया है, घोर मानसिक यन्त्रणा से संत्रस्त मध्य वर्गीय स्त्री-पुरुष के जीवन के वास्तविक अर्थ की खोज का भटकाव इन सबको नाटक यथार्थवादी शैली में उद्घाटित करता है। स्त्री-पुरुष के लगाव और तनाव तथा पारिवारिक विसंगति की यह गाथा अपने में अधूरे मनुष्य की काल्पनिक पूर्णता की खोज की महत्वाकांक्षा की यातना को उजागर करती है।

स्थूल रूप से इस नाटक में कोई कथावस्तु नहीं है। विषम परिस्थितियों में उलझे पात्रों की मन:स्थिति की टकराहट, अन्तर्द्वन्द्व, आक्रोश और कुंठाएँ यहाँ सामयिक जीवन की विसंगति को उजागर की गई है। 'आधे अधूरे' नाटक में मध्यवर्गीय परिवार की विसंगति को गति दी गई है। जिसमें पाँच सदस्यों के इस परिवार में आर्थिक कठिनाईयों ने पारिवारिक प्रेम को शोष लिया है, जिससे घर का वातावरण एक दमघोंट मनहूसियत से भर गया है। सभी इस दमघोंट वातावरण से मुक्त होना चाहते हैं, पर नियति ने जैसे उन्हें पंगु बना दिये है। 'आधे-अधूरे' नाटक की पूरी आर्थिक आयाम है। अभाव, अपूर्णता, कमियाँ, घुटन, टूटन, बोझ, अलगाव, संत्रास आदि संबंध 'अर्थ' से है। प्रस्तुत नाटक मध्य-वित्तीय स्तर से ढहकर निम्न-मध्य-वित्तीय स्तर पर आया एक घर है। जिसका पता हमको रंगमंचीय साधन-सामग्री से चल जाता है। जैसे कि - 'आधे-अधूरे' का कार्यस्थल मकान का बैठने का कमरा है, जिसमें सोफे, कुर्सियाँ, मेज़ें, अलमारी, किताबें, फाइलें, आदि हैं। यह कमरा एक समय साफ-सुथरा रहा होगा, पर सालों की आर्थिक कठिनाइयों के कारण अब सब पर धूल की तह जम गई है। क्रॉकरी पर चटखन है। दीवारें मटमैली हो गई हैं। परिवार का हर सदस्य एक-दूसरे से कटा हुआ है। घर की हवा तक में उस स्थायी तलखी (कटुता) की गन्ध है, जो पाँचों व्यक्तियों के मन में भरी हुई है - ऊब, घुटन, आक्रोश, चिड़चिड़ा घोंटनेवाली मनहूसियत, जो परस्पर में होती है। इस तनावयुक्त और विसंगति से भरा हुआ वातावरण हमको बॉक्स सेट पर साफ-साफ दिखाई देता है।

आधे-अधूरे नाटक एक स्तर पर स्त्री-पुरुष के बीच के लगाव और तनाव का दस्तावेज है। महेन्द्रनाथ सावित्री से बहुत प्रेम करता है, सावित्री भी उसे चाहती रही होगी, लेकिन ब्याह के बाद महेन्द्रनाथ को बहुत निकट से जानने पर उससे वितृष्णा होने लगी, क्योंकि सावित्री की अपेक्षाएँ बहुमुखी और अनंत है। अब महेन्द्रनाथ की बेकारी की हालात से सावित्री का व्यवहार कटु हो गया है। एक ओर घर चलाने का असाध्य बोझ है तो दूसरी ओर जिन्दगी से कुछ भी हासिल न कर पाने की तीखी कचोट। अपने बच्चों के बर्ताव से अत्यंत खिन्न और पति के बौने चरित्र से ऊबी हुई सावित्री बची-खुची जिन्दगी को ही एक पूरे, संपूर्ण पुरुष के साथ बिताने की आकांक्षा रखती है, पर यह आकांक्षा पूरी नहीं हो पाती, क्योंकि संपूर्णता की तलाश ही शायद वाजिब नहीं।

सावित्री के अभावपूर्ण मनोदशा का चित्रण जुनेजा के संवाद में व्यक्त हुआ है - जैसे ''क्योंकि तुम्हारे लिए जीने का मतलब रहा है - कितना कुछ एक साथ होकर, कितना कुछ एक साथ पाकर और कितना कुछ एक साथ ओढ़कर जीना। वह उतना-कुछ कभी तुम्हें किसी एक जगह न मिल पाता, इसलिए जिस किसी के साथ भी जिन्दगी शुरू करती, तुम हमेशा इतनी ही खाली, इतनी ही बेचैन बनी रहती। वह आदमी भी इसी तरह तुम्हें अपने आसपास सिर पटकता और कपड़े फाड़ता नजर आता और तुम...''[1] यहाँ पर सावित्री की जिन्दगी में खालीपन और कड़ुवाहट उसका विवाह बन्धन के कारण नहीं, पर वह एक प्रवृत्ति है जो वर्तमान परिस्थितियों से सन्तुष्ट न रहकर बार-बार उसे दूर रहने के लिए प्रेरित करती रहती है। यही कारण है कि, सावित्री की जिन्दगी में जो-जो आये वे अभाव को पूरा करने में असमर्थ रहे। बाद में वह स्वयं स्वीकार करती है कि ''मैंने आपसे कहा है न, बस! सब-के-सब... सब-के-सब! एक से! बिलकुल एक से है आपलोग! अलग-अलग मुखौटे, पर चेहरा! - चेहरा सबका एक ही?''[2] यह बात वह जुनेजा के सामने प्रकट करती है।

सावित्री अपने अधूरेपन का कारण अपने पति महेन्द्रनाथ में खोजती है, जो अपनी दृष्टि से संपूर्ण रूप से अपना नहीं है। जो दूसरों के खाली खजाने भरने की चीज है। उसकी यह हालत करने में उसके मित्रों का पूरा हाथ है। महेन्द्रनाथ भी एक आदमी है, जिसको अपना घर-बार है, पत्नी है, यह बात महेन्द्रनाथ को अपने कहनेवालों को बिल्कुल रास नहीं आती। सावित्री ने अपने आपको झटक लेने 1 (महेन्द्रनाथ से) भी यह कारण बताया है। वह महेन्द्र को पूर्णत: अपना बनाने की कोशिश भी करती है। महेन्द्र के दोस्तों की यह उक्तियाँ - ''सावित्री महेन्द्र के नाक में नकेल डालकर उसे अपने ढंग से चला रही है। सावित्री बेचारे महेन्द्र की रीढ़ तोड़कर उसे किसी लायक नहीं रहने दे रही है।'' उसे बराबर सुननी पड़ती है। इसी बात से यह बात खत्म न होकर इससे भी भयानक बात यह है कि - ''और वही महेन्द्र जो दोस्तों के बीच दब्बू सा बना हल्के मुस्कुराता है, घर आकर एक दरिंदा बन जाता है। पता नहीं कब किसे नोच लेगा, कब किसे फाड़ खायेगा। आज वह ताव में अपनी कमीज को आग लगा लेता है। कल वह सावित्री की छाती पर बैठकर उसका सिर जमीन पर रगड़ने लगता है। इस प्रकार के दृश्यों का बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। वे यही सोचते है कि बहुत पहले ही इन लोगों को अलग हो जाना चाहिए था। इतने पर भी जब जुनाजा (चौथा आदमी) बिन्नी को बताता है कि महेन्द्र सावित्री से बहुत प्यार करता है तब बिन्नी फूट पड़ती है कि - आप नहीं जानते, हमने इन दोनों के बीच क्या-क्या गुजरते देखा है इस घर में।'' और वह आगे कहती है कि - ''इतने साधारण ढंग से उड़ा देने की बात नहीं है, अंकल! मैं यहाँ थी, तो मुझे कई बार लगता था कि मैं एक घर में नहीं, चिड़ियाघर के एक पिंजरे में रहती हूँ जहाँ आप शायद सोच भी नहीं सकते कि क्या-क्या होता रहा है यहाँ। डैडी का चिखते हुए ममा के कपड़े तार-तार कर देना... उनके मुँह पर पट्टी बाँधकर उन्हें बन्द कमरे में पीटना... खींचते हुए गुसलखाने में कमोड पर ले जाकर... (सिहरकर) मैं तो बयान भी नहीं कर सकती कि कितने-कितने भयानक दृश्य देखे है

Scanned by CamScanner

इस घर में मेरे। कोई भी बाहर का आदमी इस सबको देखता जानता, तो यही कहता कि क्यों नहीं बहुत पहले ही ये लोग... ?''[3]

बिन्नी की बातों से जाना जा सकता है कि इन सारी परिस्थितियों के लिए जिम्मेदार महेन्द्रनाथ ही है। यदि यह सत्य है तो क्या यह सत्य नहीं है कि आज महेन्द्रनाथ जो है तो सावित्री की वजह से है। आज से २२ वर्ष पूर्व वह ऐसा नहीं था, क्योंकि तब उस पर यह साबित करनेवाला कोई नहीं था कि कैसे हर लिहाज से वह हीन और छोटा है – इससे, उससे, मुझसे, तुमसे, सभी से! पर सावित्री को उन दिनों भी महेन्द्रनाथ से शिकायत थी। उसे तब भी ऐसा आदमी नहीं लगता था जिसके साथ वह जिन्दगी काट सकती। लेकिन विडम्बना यह है कि फिर भी वह महेन्द्र को छोड़ती नहीं है। यद्यपि अपने को झटक लेने की कोशिश वह बराबर करती है, पर उसे सफलता नहीं मिलती। इस स्थिति में वह अपने को बेसहारा नहीं छोड़ना चाहती। जुनेजा के शब्दों में – सावित्री चाहती है कि जिन्दगी में यदि कुछ हासिल न हो तो कम-से-कम यह नामुराद मोहरा तो बना रहे।

इस बात से स्पष्ट होता है कि महेन्द्र और सावित्री दोनों एक दूसरे से असन्तुष्ट है। दोनों एक दूसरे को अपनी और परिवार की बेचैनी और अशांति एवं तनाव का कारण है। बच्चे भी जानते है कि अपने मम्मा-डैडी के मनमुटाव का कारण क्या है? दोनों में प्यार का अभाव है।

अशोक इक्कीस साल का सावित्री और महेन्द्रनाथ का बेटा है। उसे सावित्री के बातों से और उसके अन्य लोगों के व्यवहार से आक्रोश है। उसे सावित्री का अन्य लोगों के साथ बाहर जाना भी अच्छा नहीं लगता। घर पर पराये व्यक्तियों को आना और बुलाना भी अच्छा नहीं लगता। अशोक बेकार युवक है। सावित्री अशोक की नौकरी की सिफारिश करने के लिए अपना बॉस सिंघानिया के घर पर बुलाती है तब वह अपनी माँ के प्रति नाराज होकर कहता है कि – ''जिनके आने से हम जितने छोटे है उससे और छोटे हो जाते है अपनी नजर में।''[4] वह उससे कहता है कि आज तक जिस किसी को बुलाया है उसकी वजह यह है कि – ''उसकी किसी बड़ी चीज की वजह से। एक को कि वह इंटेलेक्चुअल बहुत बड़ा है। दूसरे को कि उसकी तनख्वाह पाँच हजार है। तीसरे को कि उसकी तख्ती चीफ कमिश्नर की है। जब भी बुलाया है, आदमी को नहीं – उसकी तनख्वाह को, नाम को, रुतबे को बुलाया है।''[5]

बिन्नी और मनोज का दाम्पत्य जीवन भी विसंगति से भरा हुआ है। बिन्नी अपनी मर्जी से मनोज के साथ भाग जाती है। वो भी एक-दूसरे को चोट पहुँचाते रहते हैं – बड़ी लड़की बिन्नी सावित्री से कहती है कि – ''जिससे उसके मन को कड़ी-से-कड़ी चोट पहुँचा सकूँ। उसे मेरे लम्बे बाल अच्छे लगते है। इसलिए सोचती हूँ, उन्हें जाकर कटा आऊँ। वह मेरे नौकरी करने हक में नहीं है। इसलिए चाहती हूँ, कहीं भी कोई भी छोटी-मोटी नौकरी ढूँढकर कर लूँ। कुछ भी ऐसी बात जिससे एक बार तो वह अन्दर से तिलमिला उठे। पर कर मैं कुछ भी नहीं पाती... ।''[6] और वह आगे कहती है कि – ''मेरा अपना घर!... और मैं आती हूँ

कि एक बार फिर खोजने की कोशिश कर देखूँ कि क्या चीज है वह इस घर में जिसे लेकर बार-बार मुझे हीन किया जाता है। (लगभग टूटते स्वर में) तुम बता सकती हो मम्मा, कि क्या चीज है वह? और कहाँ है वह? इस घर के खिड़कियों – दरवाजों में! छत में! दीवारों में? तुम में? डैडी में? किन्नी में? अशोक में? कहाँ छिपी है वह मनहूस चीज जो वह कहता है मैं इस घर से अपने अंदर लेकर गई हूँ? बताओ मम्मा क्या है वह चीज? कहाँ पर है वह इस घर में?''[7]

घर के इस वातावरण का विश्लेषण करती हुई बिन्नी कहती है कि वह इस प्रकार की हवा है कि उसमें एक घुटन है। असंतोष और अविश्वास की भावना के कारण यह हवा विषाक्त हो उठी है और लगता है कि इस दूषित हवा में कई बरस तक रहने के कारण बिन्नी का मन भी अस्वस्थ हो गया है। इस प्रकार के वातावरण में रहने के कारण किन्नी और अशोक का व्यक्तित्व भी बिन्नी से भिन्न नहीं है। सावित्री और महेन्द्र अपने बच्चों के चरित्र की जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार नहीं है। एक-दूसरे पर आशंका और संदेह तथा एक-दूसरे को ही प्रत्येक की बरबादी का कारण मानने की चेष्टा दिखाई देती है। अशोक के चरित्र के संबंध में ताना मारती हुई सावित्री महेन्द्रनाथ को कहती है कि – 'वजह का पता तुम्हें होगा या तुम्हारे लड़के को। वह भी तीन-तीन दिन दिखाई नहीं देता घर पर! तब महेन्द्र भी कहता है कि ''और लड़की तुम्हारी?'' उसने अपनी जिन्दगी खराब (बेइज्जत) करने की सीख किससे ली है। मैंने तो कभी किसी के साथ घर से भागने की बात नहीं सोची थी। यहाँ पर संकेत स्पष्ट है कि महेन्द्रनाथ की दृष्टि में यह संबंध उचित नहीं है।

अशोक का व्यक्तित्व निकम्मा है, जैसे बेमतलब घूमना, मैगज़ीन से तस्वीरें काटना और ऐसी ही बेमतलब चीजों में दिलचस्पी लेना उसके चरित्र का अंग बन गया है। इसलिए उसके प्रति उसकी छोटी बहन किन्नी को मान नहीं है। वह उसके लिए बहुत ही तुच्छ भाषा में बात करती है – ''शौकी मारा मारा फिरता है सारा दिन, मैं भी फिरती रहा करूँगी।'' इस बारे मारे फिरने के साथ कुछ और भी जुड़ा हुआ है। यह बात सावित्री को भी पता है। लेकिन वह इस संबंध के बारे में जबान नहीं खोलती, क्योंकि यह चीज परिवार के सभी सदस्यों के साथ किसी-न-किसी रूप में जुड़ी हुई है। पर जब बात सीमा से बढ़ जाती है तब सावित्री कहती है कि – दिलचस्पी तेरी सिर्फ तीन चीजों में है – दिन भर ऊँघने में, तस्वीरें काटने में, और घर की वह चीज, वह चीज ले जाकर.... और यही बात छोटी लड़की पूरी करती हुई कहती है कि ''कभी मेरी कोई चीज ले जाकर प्रेज़न्ट की चूड़ियाँ दे आता है उसे, कभी मेरा प्राइज़ का फाउन्टनपेन।'' बिन्नी भी इस भावना से मुक्त नहीं है। वह अपनी सहेली सुरेखा से अपने मम्मी-डैडी के सम्बन्ध में जो कुछ बातें करती है और उसे सुनकर अशोक का गुस्सा बढ़ जाता है। प्रस्तुत नाटक में सभी पात्र किसी-न-किसी क्षतियाँ एवं अपूर्णता से जुड़े हुए है। बच्चों में विद्रोह, आक्रोश एवं विरोध की प्रवृत्ति अधिक है। महेन्द्रनाथ और सावित्री इतने उलझे हुए है कि वे बच्चों के प्रति कोई ध्यान नहीं दे पाते है।

इस प्रकार आधे-अधूरे नाटक एक मध्यवर्गीय परिवार के आर्थिक विघटन से उत्पन्न वातावरण का यथार्थ

चित्र प्रस्तुत करता है। जिस में अपनों पर विश्वास नहीं किया जाता पर दूसरों को अपनों से श्रेष्ठ मानकर उनकी पूजा, प्रतिष्ठा, आदर, सम्मान बहुत कुछ किया जाता है। पर इससे हीनता का भाव मन में जागता है और वे व्यक्तित्व को कभी उभरने नहीं देता। जिससे जिन्दगी बेतलब हो जाती है। सर्वत्र ही तनाव, घुटन और बिखराव लक्षित होता है। परिवार के प्रत्येक सदस्य कलहपूर्ण, घुटनभरे वातावरण से मुक्त होने के लिए छटपटाता है, पर विवश रह जाता है। पात्रों के व्यक्तित्व चित्रण में लेखक ने उनके संघर्षजन्य संत्रास को संकेत किया है। पुरुष एक जिन्दगी से लड़ाई हारकर छटपटाहट लिये है, बड़ी लड़की के भाव में संघर्ष का अवसाद और व्यक्तित्व में बिखराव है, छोटी लड़की के भाव, स्वर और चाल में विद्रोह है, लड़के की हँसी तक में कड़वाहट है, सावित्री की कमाई पर पलता हुआ महेन्द्रनाथ अब वह केवल 'एक ठप्पा, एक रबड़ का टुकड़ा है। सावित्री संपूर्ण पुरुष की आकांक्षा में तनावों से गुजर रही है। इस प्रकार पूरे परिवार के सदस्यों में किसी-न-किसी प्रकार की विसंगति दृष्टिगोचर होती है।

*

* सहायक ग्रंथ :-

- आधे अधूरे - मोहन राकेश, राधाकृष्ण प्रकाश, इलाहाबाद
- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक - डॉ. रीताकुमारी भूमिका प्रकाशन, नयी दिल्ली
- नाटककार मोहन राकेश - सं. सुंदरलाल कथूरिया - कुमार प्रकाशन, नयी दिल्ली
- मोहन राकेश का नाट्य साहित्य - डॉ. पुष्पा बंसले, सूर्य प्रकाशन, दिल्ली.

* सन्दर्भ सूची :-

(१) आधे अधूरे - मोहन राकेश पृ. ९४
(२) आधे अधूरे - मोहन राकेश पृ. ९७
(३) आधे अधूरे - मोहन राकेश पृ. ८३/८४ (५)
(४) आधे अधूरे - मोहन राकेश पृ. ५७
(६) आधे अधूरे - मोहन राकेश पृ. ५८
(७) आधे अधूरे - मोहन राकेश पृ. ३५

*

Scanned by CamScanner